विद्या -भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय
नीतू कुमारी ,वर्ग -पंचम ,हिंदी, दिनांक--24-04-2021
एन.सी.ई.आर टी पर आधारित. पाठ -2

अध्याय 2

दादी माँ का पत्र

अध्यापक विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाने के पूर्व बताएँ कि यह काल्पनि वास्तविक पत्र है। इसे नेशनल बुक ट्रस्ट के नेहरू बाल पुस्तक भूतपूर्व सम्पादिका श्रीमती मोहिनी राव ने अपनी पोती प्रेमा को लि श्रीमती राव बाल साहित्य की गुरु मानी जाती हैं। वे रेडियो प कार्यक्रम भी प्रसारित करती रही हैं। पाठ की पृष्ठभूमि के निर्माण विद्यार्थियों को बताना जरूरी है कि पत्र में लेखिका ने जिस प्रेरक घ उल्लेख किया है वह आजादी के पहले के भारत में घटी। उस समय के प्रति समाज में रूढ़िवादी विचार व्याप्त थे जिन्हें स्वाधीनता आ चुनौती दे रहा था। स्त्रियाँ धीरे-धीरे परिवार की सीमा से बाहर नि पुरुषों के साथ मिलकर काम करने लग गई थीं।

मेरी प्यारी पोती प्रेमा,

मैं अपनी प्रसन्नता नहीं व्यक्त कर सकती। तुम परीक्षा में उत्तीर्ण ही नहीं हुई, बल्कि तुमने अच्छे अंक भी प्राप्त किए। इससे पता चलता है कि तुम गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर रही हो। यह प्रसन्नता की बात है कि पढ़ाई में तुम्हारा मन लग रहा है।

मुझे सदा विश्वास रहा है कि तुम जो भी निश्चय करोगी, उसे अवश्य पूरा करोगी। तुममें यह योग्यता है। तुम्हारी इच्छाशक्ति प्रबल है। तुम जो कुछ करने की ठान लोगी, उसे तो कर ही लोगी। यदि कुछ गलती हो जाती है तो लोग परिस्थितियों को दोष देते हैं। परन्तु सच यह है कि ये परिस्थितियाँ लोगों द्वारा खुद बनाई गई होती हैं।

जब मैं कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर चुकी थी, तभी मेरी सगाई कर दी गई। उस समय का यही प्रचलन था। मेरा विवाह एक ई के बाद होना तय हुआ। मेरी इच्छा थी कि इस बीच मैं कोई मनोनुकूल कार्य करूँ। इस प्रकार समय का सदुपयोग होगा।

मेरी माँ चाहती थीं कि मैं घर पर रहूँ और खाना बनाना, सिलाई-कढ़ाई आदि सीखूँ। विवाह के पूर्व इनको सीख लेना निवार्य था। परन्तु मेरे मन में कुछ और ही था। मैं कुछ रोमांचक एवं चुनौतीपूर्ण कार्य करना चाहती थी। मैं कुछ ऐसा कार्य करना हती थी जो मुझे घर की चहारदीवारी से बाहर जाने का अवसर दे।

मैं चार भाइयों में अकेली बहन थी। मैं व्यवहार में भेदभाव सहन नहीं कर सकती थी।

मुझे पता चला कि शहर के एक बालिका विद्यालय में शिक्षिकाओं की आवश्यकता है। डरते-डरते मैंने पिता जी से वहाँ करी करने की इच्छा प्रकट की। पिता जी ने मुझे सहर्ष स्वीकृति दे दी। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।

मैं दौड़कर अपने भाइयों को शुभ समाचार देने गई। उत्साहित स्वर में मैंने कहा, "मुझे तुम सबसे पहले ही नौकरी मिल एगी।"

मेरे एक भाई ने कहा, "रुको, पहले नौकरी मिल तो जाए, तब खुशी मनाना।"

दूसरे भाई ने मजाक उड़ाया, "तुम भला शिक्षिका बनोगी, और सबको पढ़ाओगी; हुँह!"

संयोग से शिक्षिका के पद पर मेरी नियुक्ति हो गई। मुझे सातवीं से दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को हिन्दी और अँगरेज ानी थी। मैं एक अच्छी छात्रा रह चुकी थी। मुझे स्वयं पर विश्वास था कि मैं इस कार्य को करने में सक्षम हूँ। हाँ, मेरे विद्यार्थी मुझ में थोड़े ही छोटे थे। इससे मुझे घबराहट होती। मुझे इस बात की चिन्ता सताती कि वे मुझे गम्भीरता से नहीं सुनेंगे।

मैंने पढ़ाना प्रारम्भ किया और दोनों विषयों को मन ाकर पढ़ाया। पढ़ाने में मेरी गहरी रुचि थी। जिस दिन मुझे ला वेतन मिला, वह मेरे जीवन का सबसे सुखद दिन था। न लेकर मैं सीधे पिता जी के पास गई। मैंने उनके ण-स्पर्श किए और बोली, "आज मुझे पहला वेतन मिला। मेरी पहली कमाई है। इसे मैं आपको देना चाहती हूँ।" ाजी गद्‌गद हो गए। मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर

दिए ,गए कहानी पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें|